केवल मूल्यांकनकर्ता के उपयोग हेतु!

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

32 पृष्ठीय

केवल परीक्षक द्वारा भरा जावे। प्रश्न क्रमांक के सम्मुख प्राप्तांकों की प्रविष्टी करे।

प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक	ांक (अंकों में)	प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक	(अंकों में)
1			17		
2			18		
3			19		
4			20		
5			21		
6			22		
7			23		
8			24		
9			25		
10			26		
11			27		
12			28		
13					
14					
15			कुल		
16					

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे ↓

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे →

प्रमाणित किया जाता है कि अन्दर के पृष्ठों के अनुरूप मुख्य पृष्ठ पर अंकों की प्रविष्टी एवं अंकों का योग सही है।

निर्धारित मुद्रा : नाम, पदनाम, मोबाईल नम्बर, परीक्षक क्रमांक एवं पदांकित संस्था के नाम की मुद्रा लगाएं।

एन.सी.झारिया
U.M.T.-010464
शा.उ.मा.वि.झुंगरहटी
8435432426

उप मुख्य परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा

परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा

एम.एल.झारिया
U.M.T.-010498
शा.उ.मा.वि.करौंदी
9399749143

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 2 के अंक = कुल अंक

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYAPRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

B
S
E

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमाँक : 01

उत्तर

उ०1) भी ।

उ०2) 1556 ।

उ०3) दो ।

उ०4) अर्थालंकार ।

उ०5) भगत जी ।

उ०6) मराठी ।

B
S
E

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक : 02

उत्तर

उ०1) जैनेन्द्र कुमार

उ०2) तीन

उ०3) पाठशाला

उ०4) वेब दुनिया

उ०5) भार

उ०6) व्यतिरेक

(5)

पृष्ठ 5 के अंक   कुल अंक

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमॉक: 03

उत्तर

उ०1) सत्य।

उ०2) सत्य।

B उ०3) सत्य।

S उ०4) सत्य।

E

उ०5) असत्य।

उ०6) असत्य।

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYAPRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक: 04

उत्तर

	क	उत्तर
1)	कथानक	कहानी
2)	संस्कृत के मूल शब्द	तत्सम
3)	यशोधर बाबू	सिल्वर वैडिंग
4)	अंतरंग साक्षात्कार	डायरी
5)	हरिवंशराय बच्चन	हालावाद
6)	प्रगतिवाद	1936
7)	यशोधरा	खण्डकाव्य

B
S
E

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक :05

उत्तर

उ०1) मुअनजो-दड़ो ।

उ०2) 15-30 मिनट ।

उ०3) धर्मवीर भारती ।

उ०4) निर्वेद ।

उ०5) दुनिया रोज बनती है ।

उ०6) दो ।

उ०7) आती हुई मुसीबत से बचना ।

BSE

क अंक कुल अंक

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न : 06

उत्तर (अथवा)

मनुष्यों की क्षमता निम्न तीन बातों पर निर्भर करती है :-

1) वंश परंपरा
2) सामाजिक उत्तराधिकार
3) मनुष्य के अपने प्रयत्न।

B
S
E

प्रश्न : 07

उत्तर

कहानी	उपन्यास
1) कहानी में जीवन के किसी एक पक्ष का मनोहारी चित्रण होता।	1) उपन्यास में जीवन का विस्तृत वर्णन किया जाता है।
2) कहानी का आकार लघु होता है।	2) उपन्यास का आकार बड़ा होता है।
उदाहरण : मुंशी प्रेमचंद (बूढ़ी काकी)	उदाहरण : मुंशी प्रेमचंद (गबन)।

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न:08

उत्तर (अथवा)

राष्ट्रभाषा की विशेषताएँ निम्न है :-

1) राष्ट्रभाषा में राष्ट्र की संस्कृति, साहित्य एवं इतिहास की प्रेरणा निहित होती है।

2) राष्ट्रभाषा को "संपर्क भाषा" के नाम से भी जाना जाता है।

3) भारत की राष्ट्रभाषा "हिंदी" को माना गया।

प्रश्न:09

उत्तर

उ०1) राम अयोध्या आ जाना।

उ०2) ललिता फूलों की एक माला बाजार से लाई।

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमाँक: 10

उत्तर

मुअनजो-दड़ो की नगर नियोजन की विशेषताँए निम्न है :-

1) मुअनजो-दड़ो में सामूहिक स्नान को अनुष्ठान मानते है इसलिए 'महाकुण्ड' की व्यवस्था की गई।

B

S 2) मुअनजो-दड़ो के प्रत्येक घरो में बड़े-बड़े 'आँगनो' की व्यवस्था थी।

E

प्रश्न क्रमाँक: 11

उत्तर (अथवा)

मुद्रित माध्यमों में लेखन के लिए ध्यान रखने योग्य बाते निम्न है :-

1) लेखन में जनसाधारण की भाषा पर विशेष बल देना चाहिए।

2) लेखन की बीच में हुई गलतियो और अशुद्धियों को सुधारना आवश्यक है।

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक :12
उत्तर (अथवा)

भाषा को सहूलियत से बरतने का अर्थ है कि प्रत्येक रचनाकार को सहज सरल एवं सामान्य बोलचाल की भाषा में अपनी बात कहनी चाहिए। अनावश्यक और आडम्बरपूर्ण भाषा का प्रयोग करने से कथ्य का प्रभाव कम होता है और वह अपने मूल्य उद्देश्य से भटक जाता है। अतः रचनाकार को सरल भाषा का प्रयोग करना चाहिए ताकि सुनने वाले को सम्पूर्ण अर्थ सहित रचनाकार की बात समझ आ जाए।

प्रश्न क्रमांक :13
उत्तर (अथवा)

प्रयोगवाद के प्रवर्तक :- सच्चिदानंद हीरानंद वात्सायन 'अज्ञेय'।

इस वाद के कवि अपने अहमनिष्ठ व्यक्तिवाद की अभिव्यंजना करते थे और सामाजिक जीवन से संबंध नहीं रखते थे।

2) इस वाद के कवियो ने नग्न (खुला) यथार्थवाद का चित्रण प्रस्तुत किया।

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक: 14

उत्तर

दो महाकाव्य निम्नलिखित हैं :-

1) रामचरितमानस → तुलसीदास
2) कामायनी → जयशंकर प्रसाद

B
S
E

प्रश्न क्रमांक: 15

उत्तर

वीर रस :

स्थायी भाव :- उत्साह

जहाँ काव्य में किसी व्यक्ति के वीरता प्रदर्शन एवं उत्साह का वर्णन होता है, वहाँ वीर रस की प्रधानता होती है।

उदाहरण :- "बुन्देलो हरबोलो के मुँह, हमने सुनी कहानी थी
खूब लड़ी मर्दानी वह तो, झाँसी वाली रानी थी।"

BSE

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमाँक : 16

उत्तर

महादेवी वर्मा

दो रचनाएँ :- दीपशिखा, यामा

भाषा शैली :-

महादेवी वर्मा जी की भाषा सहज, उत्कृष्ट एवं सशक्त थी। उन्होंने संस्कृत प्रधान शुद्ध साहित्यिक भाषा में अपनी रचना की। आपकी भाषा में पात्र अनुकूलता होने के साथ-साथ मुहावरों का प्रयोग भी है। आपकी भाषा में चित्रों को अंकित और भावों को स्पष्ट करने की एक अद्भुत क्षमता है। आपकी हिंदी भाषा में बंगाली और संस्कृत के शब्दों का सुंदर समायोजन है।

साहित्य में स्थान :-

साहित्य सेवी और समाज सेवी दोनो रूपों में महादेवी वर्मा की प्रधान रही। वे एक ओर कविता के क्षेत्र में क्षेत्र में छायावाद के चार स्तंभों में से एक हैं तो दूसरी ओर एक श्रेष्ट गद्यकार के रूप में भी आपकी चर्चा होते रही है।

आपने अपने ममतामयी हृदय से समस्त प्राणियों को एक प्रेम की डोर में बाँधा है। आप मीरा और सरस्वती बन हिंदी के नीलवर्ण आकाश में सदैव ध्रुव तारे के समान चमकती रहेंगी।

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमाँक : 17

उत्तर (अथवा)

मुहावरा	लोकोक्ति
1) मुहावरा वाक्यांश है।	1) लोकोक्ति एक पूर्ण वाक्य है।
2) मुहावरा में अंत में प्रायः 'न' होता है।	2) लोकोक्ति में अंत में 'न' नहीं होता। (अपवाद छोड़कर)
3) मुहावरा भाषा का श्रृंगार है।	3) लोकोक्ति साहित्य का गौरव है।
उदाहरण :- कोल्हू का बैल होना :- बहुत मेहनत करना	उदाहरण आम के आम गुठलियों के दाम :- दोहरा लाभ।

BSE

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमाँक: 18

उत्तर (अथवा)

फिराक गोरखपुरी

1) दो रचनाँए :- गुले नग्मा, बज्मे जिंदगी

भाव पक्ष :-

उर्दू साहित्य का बड़ा हिस्सा रहस्य और रूमानियत के बंधन में होने के कारण लोक जीवन और प्रकृति के तत्व उभरकर नहीं आ पाया कुछ शायर ही इस रिवायत को तोड़ पाए हैं जिनमे से प्रमुख नाम से 'फिराख गोरखपुरी'। इन्होंने शायरी का एक अनूठा महल तैयार किया है। प्रकृति और मौसम को अपनी शायरी का विषय बनाकर इन्होंने कहा - "दिव्यता और भौतिकता पृथक वस्तु नहीं है, जैसे हम भौतिक समझते है, वास्तव में वही दिव्य है"।

कला पक्ष :-

फिराक गोरखपुरी जी ने भावबोध और शब्दभण्डार को नई भाषा और नए विषयो से जोड़ा है। आपने कई शेर लिखे है। जैसे मीर और गालिब की तरह ही आपने कहने की शैली को अपनाकर आम जनो और जन साधारण तक अपनी बात पहुचायी है।

योग पूर्व पृष्ठ पृष्ठ 16 के अंक कुल अंक

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

साहित्य में स्थान :-

आप उर्दू नक्षत्र का एक ऐसा चमकता सितारा हैं जिसकी रोशनी आज भी शायरी को नए आयाम दे रही। आपकी शायरी की गूँज आज भी काव्य रसिकों के हृदय में गूँजती है।

उर्दू ग़ाजलकारों के बीच आपका नाम सम्मान के साथ लिया जाता है। उर्दू साहित्य में आपका स्थान अन्यतम है।

B
S
E

प्रश्न : 19

उत्तर

शीर्षक :-

उ०-1) "हमारा प्यारा भारत वर्ष"

उ०-2) भारतवासियों की निम्न विशेषता है :-

1) उनमें संचन संचय में दान है।
2) वे सदैव अतिथि का सम्मान करते हैं।
3) वचन में सत्यता और हृदय में तेज है।

उ०-3) हम अपने देश में 'सर्वस्व' न्यौछावर कर सकते हैं।

MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYED

प्रश्न क्र.

प्रश्न : 20

उत्तर

किसबी किसान - - - - - - - - - - पेट की ।।

सन्दर्भ :-

प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक "आरोह" के पाठ "कवितावली" से (उत्तर काण्ड) लिया गया है। इसके कवि भक्तिकाल के सगुण भक्तिधारा के राम भक्ति शाखा के प्रतिनिधि कवि "तुलसीदास" जी है।

B S E

प्रसंग :-

प्रस्तुत पद्यांश में कवि ने पेट की आग की पूर्ति राम जी ही कर सकते हैं। यह कहते हुए बताया है कि -

व्याख्या :-

प्रस्तुत पद्यांश में कवि कहते है कि जाहे किसान हो, बनिया हो, भिखारी हो, नौकर हो, कर्तव्य दिखाने वाला हो, चोर-चक्का क्यो न हो सभी पेट की भूख की पूर्ति करने के लिए पढ़ते है, नौकरी करते है और पहाड़ भी चढ़ते है। कभी-कभी तो ऊचे नीचे, धर्म-अधर्म के काम भी करते है यहाँ तक की अपने संतानों को तक बेचने के लिए तैयार हो जाते है। तुलसीदास जी कहते है कि पेट की भूख श्याम

EDUCATION MADHYAPRADESH BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION MADHYAPRADESH BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION MADHYAPRADESH BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION MADHYAPRADESH BHOPAL

प्रश्न क्र.

रंग वाले राम भगवान ही मिटा सकते हैं। और कहा है कि पेट की आग जंगल की आग से भी भयानक होती है।

वि.श.ष :- 1) ब्रज भाषा का प्रयोग है।
2) ऊंचे-नीचे, धरम-अधरम आदि सामासिक शब्दो का प्रयोग है।

प्रश्न : 21
उत्तर

B S E

यह शिरीष - - - - - - रहते हैं।

संदर्भ :- प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक "आरोह" के पाठ "शिरीष के फूल" से लिया गया है। इसके लेखक "हजारी प्रसाद द्विवेदी" जी हैं।

प्रसंग :- प्रस्तुत गद्यांश में लेखक ने शिरीष के फूल और अवधूत की तुलना करते हुए बताया है कि -

व्याख्या :- लेखक हजारी प्रसाद द्विवेदी जी शिरीष को एक अद्भुत ~~अवध~~ अवधूत मानते है। वे कहते हैं कि जिस प्रकार अवधूत सुख हो या दुख सभी परिस्थितियों में

प्रश्न क्र.

मस्त रहता है। उसे समाज के लेन-देन से कोई सरोकार नहीं होता उसी प्रकार शिरीष का फूल भी जेठ की भीषण गर्मी, आग उगलता सूरज और अग्निकुंड बनी धरती आदि परिस्थितियों में भी न जाने कहा से अपना रस खींचकर फलता-फूलता है और जीवित रहता है। दोनों अल-मस्त रहते हुए अपना जीवन व्यतीत करते हैं।

विशेष :- शिरीष की तुलना अवधूत से की है।
भाषा सरल, सहज स्पष्ट है।

B
S
E

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न: 22

उत्तर

वार्ड क्रमॉक :- 01
भोपाल
दिनॉक:- 06 फरवरी 2024

प्रति,
निगमायुक्त महोदय,
नगर निगम,
भोपाल (म.प्र.)

विषय:- जल की पूर्ति कराने हेतु आवेदन पत्र।

महोदय जी,

विनम्र निवेदन है कि मैं प्रार्थी अ, ब, स, भोपाल के वार्ड क्रमॉक:- 01 का स्थायी निवासी हूँ। आपको इस पत्र के द्वारा वार्ड मे हो रहे जल के आभाव से अवगत कराना चाहती हूँ। हमारे वार्ड मे नियमित रूप जल की व्यवस्था नही है कई बार महीनो तक जल नही आता है इसके कारण हमें बहुत सी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। महोदय, जल ही जीवन है, यह बहुत महत्वपूर्ण है।

B
S
E

MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYE

प्रश्न क्र.

अतः आपसे निवेदन है कि आप हमारी परिस्थिति को ध्यान में रखते हुए हमारे वार्ड में उचित रूप से जल की व्यवस्था और पूर्ति करवाने का कष्ट करे ताकि हम सुखमय जीवन जी सके।

वास्ते विनय पेश है

प्रार्थी
अ, ब, स

B
S
E

EDUCATION, MADHYAPRADESH, BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYAPRADESH, BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYAPRADESH, BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYAPRADESH, BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION

प्रश्न क्र.

प्रश्न : 23

उत्तर

प्रदूषण का बढ़ता प्रभाव

"मेरी दशा का मुझे ज्ञात नहीं,
लोगो से सुना है परेशान हूँ मैं"

1) रूपरेखा

B 1) प्रस्तावना
S 2) प्रदूषण क्या है
3) प्रदूषण के कारण
E 4) रोकथाम के उपाय
5) उपसंहार

1) प्रस्तावना :-

आज प्रदूषण सबके सामने एक चुनौति बनकर खड़ा है। प्रदूषण ने मानव का जीना दूभर कर दिया है। आज आसमान विषैले धुए और धूल से भर उठा है। जल, वायु, धरती सब दूषित हो रहे हैं। वृक्ष काटे जा रहे हैं। इन समस्याओं को जल्द से जल्द रोकना होगा नहीं तो मानव का जीवन असंभव हो जाएगा।

"सबको देता यही शिक्षा
पर्यावरण की करों सुरक्षा।"

पूर्व पृष्ठ

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

मध्यप्रदेश

प्रश्न क्र.

2) प्रदूषण क्या है? :-

सबसे बड़ा प्रश्न यह उठता है कि प्रदूषण वास्तव में है क्या जिसके कारण मानव का जीना दूभर हो गया है।

प्रदूषण जल, वायु, धरती के भौतिक, रासायनिक एवं जैविक गुणों में आने वाला अवांछनीय तत्व से है जिसके विकृतियाँ उत्पन्न होती है।

B S E

3) प्रदूषण के कारण :-

अणु और परमाणु से निकला विषैला धुँआ ही पर्यावरण को प्रदूषित करता है जिससे रक्त कैंसर भी होता है। आज मानव औद्योगीकरण की ओर बढ़ रहा है और नगर-नगर, शहर-शहर कल कारखाने स्थापित हो रहे हैं। इन कारखाने से निकला धुँआ आकाश में भरता जा रहा है वृक्षों को काटकर बड़े-बड़े नगर स्थापित किए जा रहे हैं यही प्रदूषण का मुख्य कारण है।

4) रोकथाम के तरीके :-

जल प्रदूषण को रोकने के लिए गन्दा पानी नदियों में न डाला जाए और उसे भूमिगत किया जाए। वायु प्रदूषण रोकने के लिए चिमनी में फिल्टर लगाया जाए ताकि प्रदूषित पदार्थ पर्यावरण में न आने पाए।

EDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIO

प्रश्न क्र.

वृक्षों को अधिक से अधिक लगाकर हम प्रदूषण की हानि से बच सकते हैं।

"वृक्ष धरा के भूषण हैं
करते दूर प्रदूषण हैं॥"

5) उपसंहार :-

प्रदूषण दूर करने के लिए सरकार के साथ-साथ हमें भी अपने योगदान देने होंगे। पर्यावरण बहुत ही सुन्दर वस्तु है और हमें इसे बचाना ही होगा तभी मानव का जीवन सुखमय है।

"पर्यावरण की करो सुरक्षा
वरना कैसे हो पाएगी आत्मरक्षा"

BSE